



नटराज स्तोत्रं (पतंजलि कृतम्)-चरणशृंगरहित श्री नटराज



<https://www.chalisa.online>

॥ नटराज स्तोत्रं (पतंजलि कृतम्) ॥

चरणशृंगरहित श्री नटराज स्तोत्रं

सदंचित-मुदंचित निकुंचित पदं झालझालं-चलित मंजु कटकं ।

पतंजलि द्वंगंजन-मनंजन-मचंचलपदं जनन भंजन करम् ।

कदंबरुचिमंबरवसं परममंबुद कदंब कविडंबक गलम्

चिदंबुधि मणि बुध हृदंबुज रवि पर चिदंबर नटं हृदि भज ॥ 1 ॥

हरं त्रिपुर भंजन-मनंतकृतकंकण-मखंडदय-मंतरहितं

विरिचिसुरसंहतिपुरंधर विचितिपदं तरुणचंद्रमकुटम् ।

परं पद विखंडितयमं भसित मंडिततनुं मदनवंचन परं

चिरंतनममुं प्रणवसंचितनिधि पर चिदंबर नटं हृदि भज ॥ 2 ॥

अवंतमखिलं जगदभंग गुणतुंगममतं धृतविधुं सुरसरित-

तरंग निकुरुंब धृति लंपट जटं शमनदंभसुहरं भवहरम् ।

शिवं दशदिगंतर विजृंभितकरं करलसन्मृगशिशुं पशुपति

हरं शशिधनंजयपतंगनयनं पर चिदंबर नटं हृदि भज ॥ 3 ॥

अनंतनवरबलविलसक्लटककिणिझालं झालझालं झालरवं
मुकुंदविधि हस्तगतमद्वल लयध्वनिधिमिद्विमित नर्तन पदम् ।

शकुंतरथ बर्हिरथ नदिमुख भृंगिरिटिसंघनिकटं भयहरम्

सनंद सनक प्रमुख वंदित पदं पर चिदंबर नटं हृदि भज ॥ 4 ॥

अनंतमहसं त्रिदशवंद्य चरणं मुनि हृदंतर वसंतममलम्

कबंध वियदिद्ववनि गंधवह वह्निमख बंधुरविमंजु वपुषम् ।

अनंतविभवं त्रिजगदंतर मणि त्रिनयनं त्रिपुर खंडन परम्

सनंद मुनि वंदित पदं सकरुणं पर चिदंबर नटं हृदि भज ॥ 5 ॥

अचिंत्यमलिवृंद रुचि बंधुरगलं कुरित कुंद निकुरुंब धवलम्

मुकुंद सुर वृंद बल हंतृ कृत वंदन लसंतमहिकुडल धरम् ।

अकंपमनुकंपित रति सुजन मंगलनिधि गजहरं पशुपतिम्

धनंजय नुतं प्रणत रंजनपरं पर चिदंबर नटं हृदि भज ॥ 6 ॥

परं सुरवरं पुरहरं पशुपति जनित दंतिमुख षण्मुखममुं

मृडं कनक पिंगल जटं सनक पंकज रवि सुमनसं हिमरुचिम् ।

असंघमनसं जलधि जन्मगरलं कवलयंत मतुलं गुणनिधिम्

सनंद वरदं शमितमिंदु वदनं पर चिदंबर नटं हृदि भज ॥ 7 ॥

अजं क्षितिरथं भुजंगपुंगवगुणं कनक शृंगि धनुषं करलसत्

कुरंग पृथु टंक परशुं रुचिर कुंकुम रुचिं डमरुकं च दधतं ।

मुकुंद विशिखं नमदवंध्य फलदं निगम वृंद तुरां निरुपमं

स चंडिकममुं झाटिति संहृतपुरं पर चिदंबर नटं हृदि भज ॥ 8 ॥

अनंगपरिपंथिनमजं क्षिति धुरंधरमलं करुणयंतमखिलं

ज्वलंतमनलं दधतमंतकरिपुं सततमिंद्र सुरवंदितपदम् ।

उदंचदरविंदकुल बंधुशत बिंबरुचि संहति सुगंधि वपुषं

पतंजलि नुतं प्रणव पंजर शुकं पर चिदंबर नटं हृदि भज ॥ 9 ॥

इति स्तवममुं भुजंगपुंगव कृतं प्रतिदिनं पठति यः कृतमुखः

सदः प्रभुपद द्वितयदर्शनपदं सुललितं चरण शृंग रहितम् ।

सरः प्रभव संभव हरित्यति हरिप्रमुख दिव्यनुत शंकरपदं

स गच्छति परं न तु जनुर्जलनिधि परमदुःखजनक दुरितदम् ॥ 10 ॥

इति श्री पतंजलिमुनि प्रणीतं चरणशृंगरहित नटराज स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ <https://www.chalisa.online> ॥